क्या संस्कृत मृत भाषा है?

*डॉ. अनुजा शर्मा

शोध सारांश

उन्नीसवीं सदी में किसी वैदेशिक भाषा शास्त्री ने संस्कृत को डैड लेगवेजा कह दिया या किन्तु संस्कृत पंडित इस कथन को गलत मानकर उसका सयुक्ति खंडन करते रहे पं. हषीकेश भट्टाचार्य संस्कृत को मृतभाषा कहने वाले मूखों को निरूतन कर देते थे।

वस्तुतः यह विवाद इसलिए उत्पन्न हुआ कि एक धारा यह मानती थी कि संस्कृत केवल शोध, अनुसंधान के योग्य प्राचीन भाषा है, यह शास्त्रीय भाषा रही है, पहले भी कभी व्यवहार–भाषा (स्पोकन लैंग्वेज) नहीं रही, केवल पुस्तकस्थ और पंडितों की भाषा रही जबकि अन्यधारा उसे जीती जागती सर्जनात्मक–साहित्य की वाहिनी भाषा मानती थी जो पहले भी सहस्त्राब्दियों तक व्यवहार भाषा रही थी। इस विवाद के तह में जाकर विश्लेषण करें तो लगेगा कि संस्कृत भाषा या कोई अन्य प्राप्य भाषा जीवित है या मूत यह एक अत्यन्त परिभाषिक भाषा–शास्त्रीय प्रश्न है, जिसका विवेचन पूर्णतः भाषा–वैचारिक पद्धति से ही हो सकता है तथा उसी दृष्टिकोण की आधुनिक प्राविधिक जगत् में उपयोगिता है।

भाषा विज्ञान की एक परिभाषा के अनुसार मृत भाषा उसे कहते है जो आजकल जन–व्यवहार या साहित्य रचना की भाषा न रही हो, केवल 'पुस्तकस्थ' हो। एक दूसरी परिभाषा यह भी है कि जो वर्तमान में केवल साहित्य रचना में प्रयुक्त हो किन्तु लोगों के व्यवहार में बोली न जानी हो, वह मृत भाषा है। कुछ तथाकथित आधुनिक लोग संस्कृत को मृतभाषा कहते है उन्हें यह बताना आवश्यक है कि भाषा शास्त्र का यह नियम है कि बिना लोक व्यवहार में आये या संप्रेषण का माध्यम बने विश्व में कभी भी भाषा का जन्म नहीं होता। विश्व में ऐसी कोई भाषा नहीं है जो कहीं न कहीं कभी न कभी लोक व्यवहार की भाषा न रही हो। रही बात संस्कृत की तो उच्चशिक्षित लोगों की भाषा है या यह उच्चवर्ग के ब्राह्मणों के कर्मकाण्ड की भाषा रही है या यह कभी बोलचाल की भाषा नहीं रही। यह केवल साहित्य लेखन का माध्यम है।

इस गलत फहमी के दो कारण हैं, एक तो संस्कृत नाटकों में निम्न पात्रों और स्त्रियों द्वारा प्राकृत में बोला जाना जिससे लोग यह सिद्ध करते हैं कि केवल उच्चशिक्षित संस्कृत बोलते थे, बाकी के प्राकृत और दूसरा वाल्मीकीय रामायण का यह श्लोक–

वाचं चोदा हरिष्यामि मानुषीमिह संस्कृताम् ।
यदि वाचं प्रदास्यामि द्विजातिरिव संस्कृताम् ।।
रावणं मन्यमाना मां सीता भीता भविष्यति।।

जब हनुमान सीता के पास जाते हैं तो अशोक वृक्ष पर छिपे हुए सोचते हैं कि यदि उसे संस्कृत में बोलूंगा जो केवल ब्राह्मण ही बोलते है, और रावण ब्राह्मण है तो सीता मुझे रावण समझेगी अतः मैं प्राकृत जनों द्वारा बोली जाने वाली संस्कृत भाषा में ही बोलूँगा।

परन्तु भाषा शास्त्रियों ने शोध करके इन दोनों ही तर्कों को खोखला साबित कर दिया, उनके अनुसार नाटकों में स्त्रियों का प्राकृत और पुरुषों का संस्कृत बोलना संस्कृत को अव्यवहरणीय किसी प्रकार सिद्ध नहीं करता यह ठीक उसी प्रकार है जैसे आज के हिन्दी नाटक में नौकर से अवधी या भोजपुरी बुलवा दी जाये। इससे क्या यह सिद्ध हुआ कि हिन्दी स्पोकन लैंगवेज नहीं है? हिन्दी की तरह संस्कृत शिष्ट व्यवहार भाषा और संपर्क भाषा थी। प्राकृत भाषाएं बोलियां थी। वाल्मीकि के "द्विजातिव संस्कृताम्" का अर्थ संस्कृत भाषा नहीं है यह भी अब सुविदित है।

संभवतः मध्यकाल में, जब जाति–मेद बहुत कट्टर हो चला था. द्विजातियों के अतिरिक्त किसी को वेदपाठ का अधिकार नहीं था तथा ''स्त्रीशूद्रद्विजबन्धूनांत्तयी न श्रुतिगोचरा'' जैसे नियम कट्टर हो गये थे, कुछ सम्प्रदायवादी कर्मकाण्डियों ने संस्कृत को अपनी बपौती बतलाक कर सदा इसे ब्राह्मण वर्ग की भाषा सिद्ध करने का दुष्प्रयास किया हो। तभी किसी विदेशी विद्वान ने उस स्थिति को देखकर यह कल्पना की हो कि शायद सदा से संस्कृत उच्च वर्ग की ही भाषा रही है।

आज की स्थिति

बोलचाल की भाषा में संस्कृत –

भारत के संविधान में संस्कृत आठवीं अनुसूची में शामिल है जबकि उत्तराखण्ड राज्य में इसे दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा हासिल है। इसके अलावा देश के कई हिस्सों में इसे सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कर्नाटक के मजदूर, मध्यप्रदेश में नरसिंहपुर जिले के मोहाद और राजगढ़ जिले के झिरि, राजस्थान के बूंदी जिले के कापेरान, बांसवाड़ा जिले के खाडा और गगोडा उत्तरप्रदेश के बागपत में बावली और ओड़ि के श्यामसुंदरपुर गांव में संस्कृत बोलचाल की भाषा है। संस्कृत से प्रभावित है दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएं–

प्राचीनकाल में भारत की राजकाज की भाषा रही संस्कृत की लोकप्रियता अन कम भले ही हो गई हो, लेकिन संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के मुताबिक संस्कृत ही सभी भाषाओं की जननी है। रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 97 प्रतिशत, भाषाएं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संस्कृत से प्रभावित है। यह अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में (जीम की सभी सवेदिकाओं का इस्तेमाल होता है। अमेरिकन हिंदू यूनिवर्सिटी के मुताबिक संस्कृत बोलने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और रक्त का प्रवाह बेहतर होता है। इतना ही नहीं इससे मस्तिष्क की सक्रियता भी बढ़ती है। माना जाता है कि यह कई तरह की बीमारियों से खा करने में भी सहायक होती है। फोर्ब्स रक्षा मैग्जीन के अनुसार संस्कृ त सभी भाषाओं में सबसे ज्यादा कम्प्युटर–फ्रेंडली है। नासा की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका छठी और सातवी पीढ़ी के ऐसे सुपर कम्प्युटर्स तैयार कर रहा है जो संस्कृत पर आधारित होंगे। संस्कृत की पांडुलिपियों पर शोध के लिए नासा में अलग से एक डिपार्टमेंट बनाया गया है। नासा के पास ऐसी 60 हजार से ज्यादा पांडुलिपिया है वहीं लंदन के एक स्कूल जेम्स जूनियर स्कूल में सभी छात्रों के लिए संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य है।

देश के शीर्ष वैज्ञानिकों में शुमार इसरो के पूर्व प्रमुख जी माधवन नायर ने कहा कि आर्यभट्ट जैसे भारतीय खगोलविद न्यूटन से 1500 वर्ष पहले से गुरुत्वाकर्षण के बारे में जानते थे। उन्होंने कहा, वेद के कुछ श्लोकों में चंद्रमा पर जल की मौजूदगी का जिक्र है। नायर का कहना था कि भारतीय वेदों में तब धानुकर्म, बीजगणित वास्तुकला, और ज्योतिष शास्त्र के उदाहरण स्थान–स्थान पर मिलेंगे। संस्कृत का व्यापक वैज्ञानिक चिंतन परंपरा एवं आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय मनीषियों (आर्यभट्ट, वराहमिहिर, बोधायन, चरक, सुक्षुत, पराशर आदि) के योगदान को समझे बिना अधुरा है।

भारतीय परंपरा में गणेश दैवज्ञ ने अपने ग्रन्थ ''बुद्धिविलासिनी'' में गणित की परिभाषा निम्नवत की है गण्यते संख्यायते तद्धणितम्। तत्प्रतिपादकत्वेन तत्संज्ञ शास्त्र उच्यते। (जो परिकल्पना करता और गिनता है, वह गणित

कहलाता है) तथा वह विज्ञान जो इसका आधार है वह भी गणित कहलाता है। वेदांग ज्योतिष में गणित का स्थान सर्वोपरि (मूर्धन्य) बताया गया है।

यथा शिखा मयूराणां नागनां मणयो, यथा।
तद्धर वेदांगशास्त्राणां गणितं मूर्धिनं संस्थितम्।।

(वेदांग ज्योतिष–05)

जिस प्रकार मोरों के सिर पर शिखा और नागों के सिर में मणि सर्वोच्च स्थान में होते है उसी प्रकार वेदांगशास्त्रों में गणित का स्थान सबसे ऊपर (मूर्धन्य) है।

ज्योतिष– रोग एवं उपचार

प्राचीन ऋषियों ने भी इस सत्य की घोषणा की थी कि ''न मुत्यवेडतस्थे कदाचन'' (ऋग्वेद) अर्थात् में मरने के लिए कदापि पैदा नहीं हुआ हूँ। ''अमृतस्य पुत्राः'' की यह कामना स्वाभाविक है और यही कामना हमें ले जाती है ज्योतिष विज्ञान की और।

ज्योतिष विज्ञान और चिकित्सा शास्त्र का सम्बन्ध प्राचीनकाल से रहा है। पूर्वकाल में एक सुयोग्य चिकित्सक के लिए ज्योतिष विषय का ज्ञाता होना अनिवार्य था। इससे रोग निदान में सरलता होती थी यद्यपि कुछ दशक पूर्व तक विदेशी प्रभाव के कारण हमारे ज्योतिष ज्ञान पर कड़ी और भ्रामक आलोचनाओं का कोहरा छाया था तथा इसे बड़ी हेय दृष्टि से देखा जाता था, तथापि सौभाग्य से इधर कुछ समय से लोगों का विश्वास तथा आकर्षण इस विषय पर पुनः बढ़ता नजर आ रहा है।

''जन्मान्तर कृतं पापं व्याधिरूपेण जायते मानव शरीर के साथ व्याधि का सम्बन्ध जन्म जन्मान्तर का है। ज्योतिषीय ग्रन्थों में विविध रोगों की उत्पत्ति के योगायोगों का विस्तार से निरूपण किया गया है लेकिन समय के साथ जहाँ रोगोपचार में क्रांति हुई है वही विविध प्रकार के रोग भी प्रकट हुए हैं। इन नवीन उद्घाटित रोगों के विषय में ज्योतिष शास्त्र क्या संकेत करता है यह ज्योतिषीय अन्वेषण का विषय रहा है।

ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग की प्रकृति रोग का प्रभाव क्षेत्र रोग का निदान और साथ ही रोग के प्रकट होने की अवधि तथा कारणों का भली–भाँति विश्लेषण किया जा सकता है। यद्यपि आजकल चिकित्सा विज्ञान ने पर्याप्त उन्नति कर ली है तथा कई आधुनिक और उन्नत प्रकार के चिकित्सकीय उपकरणों द्वारा रोग की पहचान सूक्ष्मता से हो भी जाती है, तथापि कई बार देखने में आता है कि जहाँ इन उन्नत उपकरणों द्वारा रोग की पहचान का सटीक निष्कर्ष नहीं निकल पाता है, वहीं रोगी का स्वास्थ्य धन, समय आदि का व्यर्थव्यय– क्लेशकारक भी हो सकता है। अतः ऐसे में जो बात रह जाती है वह है दैवव्यपाश्रय–चिकित्सा। किसी विद्वान् देवज्ञ के विश्लेषण एवं उचित परामर्श द्वारा न केवल स्थिति स्पष्ट होती है, अपितु कई बार अत्यन्त सहजता से (ग्रहदान तथा जय आदि से रोग दूर हो जाता है इस दृष्टि से एक कुशल ज्योतिषी, चिकित्साविद् तथा रोगी दोनों के लिए मार्गदर्शक बन सकता है। परन्तु समस्या यह है कि चिकित्सक, वैज्ञानिक प्रमाणों को ही सत्य मानते हैं प्रमाणों के लिए ज्योतिषियों को अस्पतालों में भिन्न–भिन्न रोगियों पर अध्ययन करना होगा, आंकड़े एकत्रित करके अपनी बात की प्रमाणिकता सिद्ध करनी होगी। यह भी सत्य है कि ईश्वर प्रमाण से परे है। प्रार्थना मंत्र, जय की अपनी शक्ति होती है प्रार्थना में इतनी ताकत होती है कि इजरायल में हैफा शहर के पास छोटे से करने उस्फिया की रहने वाली टेरिसी दाउद के पैर से जानलेवा कैंसर ट्यूमर गायब हो गया (8 जनवरी 2014. बुधवार दैनिक भास्कर P.N.8) टेरिसी को जब कैंसर का पता चला तब से वे लगातार अपने स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना करने लगीं उनकी प्रार्थना का असर शुरू हो गया। बिना इलाज

के पैर से सूजन उतरनी गई और दर्द जाने लगा। तीन महीने बाद वे तेल अवीव के इचिलोव अस्पताल पहुँची और कुछ टेस्ट कराए। रिपोर्ट में पता चला कि उनके पैर से कैंसर ट्यूमर पूरी तरह खत्म हो चुका है। डॉ बिकल्स ने कहा, उन्होंने अपने जीवन में कभी ऐसा मामला नहीं देखा। मैं सर्जन हूँ मुझे पता नहीं था, स्वर्ग से भी कोई उपचार हो सकता है, लेकिन टेरिसी के केस में यही हुआ। यह उन्हें ईश्वर की ओर से ही तोहफा है महान भौतिक वैज्ञानिक आइंस्टीन ने भी कहा था– यह दुनिया जिस शक्ति से चल रही है उसके बारे में हम कुछ नहीं जानते कदाचित् यहाँ शक्ति से तात्पर्य आइंस्टीन का ईश्वर से ही था।

ज्योतिषशास्त्र में द्वादश राशियों, नवग्रहों सत्ताईस नक्षत्रों आदि के द्वारा रोग के संबंध में जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कालपुरूष के विभिन्न अङ्गों के नियन्त्रित और निर्देशित करने वाली राशियों, ग्रहों आदि की स्थितियों के आधार पर हम किसी निष्कर्ष पर पहुँचते है। जन्म में स्थित प्रत्येक राशि, ग्रह आदि शरीर किसी न किसी अङ्ग प्रतिनिधित्व करते हैं। जिस ग्रह आदि का दूषित चक्र प्रभाव रह सकता है, उससे सम्बन्धित अंग पर रोग का प्रभाव रह सकता है।

ज्योतिष विज्ञान में किसी भी विषय के परिज्ञान के लिये जन्म–चक्र के तीन बिन्दुओं लय, सूर्य तथा चन्द्र का अलग–अलग और परस्पर एक दूसरे से अन्तसम्बन्धों का विश्लेषण मुख्य होता है। यह अध्ययन 'ज्योतिष और रोग' के संदर्भ में और भी उपयोगी है। लग्न जहाँ बाह्य शरीर का बाह्य व्यक्तित्व का दर्पण होता है वहीं सूर्य आत्मिक शरीर इच्छा–शक्ति एवं ओज का प्रतीक होता है। चन्द्रमा का सम्बन्ध हमारे मानसिक व्यक्तित्व, भावनाओं तथा संवेदनाओं से होता है।

इस प्रकार नवग्रह दान–पूजन आदि से रोगोपचार में श्रद्धा की महती भूमिका होती है। पूर्ण निष्ठा उत्साह तथा संकल्पबद्धता से किये गये कार्य की सफलता वैसे भी सुनिश्चित होती है। अत्यन्त मारक ग्रह की दशा हो तो महामृत्युन्जय जप करना चाहिए।

***सह–आचार्य**
संस्कृत विभाग,
राजकीय महाविद्यालय, टोंक (राजस्थान)

संदर्भ ग्रन्थ सूची

आदिकाव्य रामायण – गीता प्रेस गोरखपुर

विभिन्न पत्रिकाओं से प्राप्त लेख